रीलों की चकाचौंध में गुम होती संवेदनाएँ

▶ मनोज अरुण व्यास
▶ प्रस्तुति-जवाहर डोसी पीयूष

आज हर किसी पर सोशल मीडिया पर एकाएक छा जाने का ऐसा अंधा जुनून हावी हो गया है कि शायद ही इससे कोई अछूता बचा हो।घर-परिवार के बच्चे हों,युवा हों या बुजुर्ग हर कोई कुछ देर की प्रसिद्धि पाने की होड़ में शामिल दिखाई देता है मानो अब जीवन का हर पल कैमरे के लिए ही जीया जाने लगा हो,स्वयं के लिए नहीं।बात चाहे मंदिर में देवदर्शन की हो,किसी पर्यटन स्थल की सैर की,घर में सुबह के नाश्ते की हो या रात के भोजन की,नए कपड़े पहनने की हो या मेकअप मय चेहरा दिखाने की,वैवाहिक कार्यक्रम की हो या जन्मदिन की,यहां तक कि सड़कों से लेकर अस्पताल और श्मशान घाट भी छूटे नहीं हैं।

मतलब हर जगह हर अवसर रील बनाने का माध्यम बन चुका है। बस स्थान बदल रहे है,प्रसंग बदल रहे हैं लेकिन रीलबाज़ी का जुनून ज्यों का त्यों बना हुआ है।यहां सबसे अधिक चिंता इस बात की है कि यह प्रवृत्ति संवेदनशील और पवित्र अवसरों तक भी बगैर किसी शर्म और झिझक के पहुँच रही है।हालात यहां तक पहुंच चुके है कि परिवार सदस्य की गंभीर बीमारी,अस्पताल का आईसीयू,दुर्घटना स्थल,अंतिम यात्रा और यहाँ तक कि श्मशान घाट जैसी जगहों पर भी कैमरे बंद नहीं हो रहे हैं।ऐसी जगहों पर प्रायः मौन,प्रार्थना और संवेदना की आवश्यकता होती है लेकिन यहाँ भी लाइक्स,व्यूज़ और फ़ॉलोअर्स की दौड़ जब-तब दिखाई देती है।इस तरह प्रसिद्धि और कमाई की चाह मर्यादा,संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों पर भारी पड़ रही है। यदि इसी तरह हम लोग केवल कैमरे के लिए जीने लगे और जीवन को केवल कंटेंट समझने लगे हैं तब निश्चित है कि हमारी संवेदनाएँ पीछे छूटती ही चली जाएंगी....

मेरी जैसी जिंदगी

▶ किरण काजल बेंगलुरू

आज एक सज्जन डाक्टर साहब के पास अपने बेटे को लेकर इलाज के लिए गये । इलाज संबंधी सारी बातचीत हो जाने के बाद उस सज्जन ने अपने बेटे से कहा डाक्टर साहब का पैर छुओ बच्चे ने तुरंत अपने पिता के कहे अनुसार डाक्टर साहब का चरण स्पर्श किया । उस सज्जन महोदय ने डाक्टर साहब से कहा डाक्टर साहब मेरे बेटे को आशीर्वाद दीजिए कि वो बड़ा होकर आपकी तरह ही बने ।

डाक्टर साहब ने उनकी बात को बीच में ही काटते हुए कहा नहीं नहीं ऐसा बिल्कुल भी मत कहिए मेरे जैसा तो ये कभी ना बने । आपको मेरी कहानी मालूम है । मैं भले ही आज इतना बड़ा डाक्टर हूं । हर माता पिता चाहते हैं कि उनका बच्चा मेरी तरह हो मगर मैं ऐसा नहीं चाहता हूं ।मेरी जिंदगी ऐसी है जिस में ना सुकून है और ना शांती ..! सबकुछ होने के वाबजूद भी मैं खुश नहीं हूं और ना ही मुझ से मेरा परिवार ही खुश हैं ।

मैं अपने परिवार से बहुत प्रेम करता हूं और शायद वो भी मुझ से उतना ही स्नेह रखते हैं मगर मेरे और उनके स्नेह में फर्क है। आप जानते हैं मेरी पत्नी कहती हैं मुझ से मुझे छोड़ दो या अपनी मां को छोड़ दो हम दोनों साथ नहीं रह सकते हैं । तुम्हें हम दोनों में से किसी एक को चुनना होगा । मेरी मां जो अब चल फिर भी नहीं सकती है ।व्हीलचेयर पर है उसे सबसे ज्यादा जरुरत अब मेरी है।

परिवार की है उसे सेवा की जरुरत है । परिवार के साथ की जरुरत है । देखभाल की जरूरत है । ऐसे में वो मेरी पत्नी कहती हैं मैं अपनी मां को छोड़ दूं ।। मैं अपनी मां से बहुत प्यार करता हूं और मैं अपनी पत्नी को भी चाहता हूं मगर मैं दोनों के साथ नहीं रह सकता हूं । मेरी किस्मत में परिवार का सुख नहीं है फिर क्या फायदा मेरे धनवान होने का मेरे डाक्टर बनने का मैं कभी नहीं चाहूंगा की मैं जिस नाव पर सवार हूं उस पे आपका या किसी का भी बच्चा कभी सवार हो आज मेरी स्थिति ऐसी है कि मुझे फैसला करना है कि मैं किसके साथ रहना चाहता हूं और मैंने अपने दिल पर पत्थर रख कर ये फैसला कर लिया है कि मुझे मेरी मां के साथ रहना है । मैं अपनी पत्नी को मना कर समझा बुझा कर थक गया मगर वो नहीं मानी अपनी जिद्द पे खड़ी रही मैं उसे बहुत याद करुंगा उसके बिना जी नहीं सकूंगा मगर उसकी खुशी के लिए उस से अलग दूर रहूंगा पर मां को नहीं छोड़ सकूंगा अगर मां को छोड़ दिया तो मेरा जमीर मर जाएगा फिर जी कर भी क्या करुंगा ।

विश्रामगृह, केंद्र नहीं अय्याशी का..?

▶ जवाहर डोसी 'पीयूष', महिदपुर (उज्जैन)

श्री गंगानगर राजस्थान का मामला अब तक का सबसे दुर्दांत मामला है।इस घटना ने पिछले सभी उदाहरण पीछे छोड़ दिए हैं। मात्र 13 साल की नाबालिग अबोध बालिका और उसकी 32 बेशर्म खूंखार दरिंदों से मुठभेड़ 5 दिन तक होना सभी को विचलित किए दे रही है।

उसके तन-मन को,जिसका जैसे मन हुआ,घायल/जख्मी करते रहे यह कथित मर्दानगी बताने वाले नामर्द लोग।यह घटना मानव समाज के लिए सबसे बड़ा कलंक है।विश्रामगृह में तो चाहे दंपति ही क्यों ना ठहरें,उन्हें यह मानकर चलना चाहिए कि यह मौज-शौक,मटर गश्ती करने की जगह नहीं,सिर्फ आराम करने का उद्देश्य होना चाहिए।वर्तमान परिपेक्ष्य में तो वहां पर अब सीसीटीवी कैमरे लगाकर पूरी गतिविधियों पर पैनी नजर रखी जाना चाहिए ताकि सभी क्रियाकलापों से परिचित हुआ जा सके।ऐसे मामलों में अंतिम सजा सजा-ए-मौत ही होना चाहिए पर कानून की आड़ में दया ही करना है तो उन्हें दुष्कर्म के लायक ही ना रहे, इस तरह भी बना कर रखा जा सकता है।

टाइफून बावी के बहाने प्रकृति की चेतावनी को समझने की जरुरत

▶ दुर्गेश्वर राय, गोरखपुर
(लेखक शैक्षिक संवाद मंच के संयोजक हैं)

लगभग 285 किलोमीटर प्रति घंटे की निरंतर प्रचंड गति से बहती हवाओं और 330 किलोमीटर प्रति घंटे से भी अधिक तेज़ झोंकों के साथ जब इस दानवी चक्रवात ने अमेरिकी द्वीप क्षेत्र गुआम, उत्तरी मारियाना द्वीप समूह और ताइवान से होते हुए चीन के झेजियांग प्रांत के तटीय शहरों पर आघात किया, तो जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो गया।

प्रकृति जब विकराल रूप धारण करती है, तो मानव की बनाई हुई पूरी व्यवस्था पल भर में तिनके की तरह बिखरने लगती है। उत्तर-पश्चिमी प्रशांत महासागर से उठा टाइफून बावी हमारी उसी बदलती हुई पृथ्वी की एक भयानक और जीवंत तस्वीर था, जहाँ महासागर अब उबल रहे हैं और हवाएँ तबाही मचा रही हैं। श्रेणी-5 के घातक सुपर टाइफून के रूप में विकसित हुए बावी ने जिस तरह से प्रशांत महासागर के द्वीपों से लेकर पूर्वी एशिया के तटीय भूभागों तक तांडव मचाया, उसने दुनिया भर के पर्यावरणविदों, मौसम वैज्ञानिकों और विचारकों को सोचने पर मजबूर कर दिया है।

चक्रवात किसी भी महासागर के तापमान और वायुमंडलीय परिस्थितियों की उपज होते हैं। प्रशांत महासागर के जिस माइक्रोनेशिया और मारियाना क्षेत्र में बावी का जन्म हुआ, वहाँ समुद्र की ऊपरी सतह का तापमान 29 से 30 डिग्री सेल्सियस के आसपास दर्ज किया गया था। समुद्र का इतना गर्म होना चक्रवातों के लिए ईंधन का काम करता है। जब समुद्री जल इतना अत्यधिक गर्म होता है, तो उससे भारी मात्रा में वाष्पीकरण होता है, जो वायुमंडल में जाकर विशालकाय बादलों और कम दबाव के विशाल क्षेत्रों का निर्माण करता है। इसके साथ ही, उस समय प्रशांत महासागर में निर्मित हो रही एल-नीनो की स्थितियों ने इस तूफ़ान को पूर्व से पश्चिम की ओर लंबी दूरी तय करने और लगातार गर्म पानी से ऊर्जा सोखने का सुनहरा अवसर प्रदान किया। ऊपरी और निचले वायुमंडल की हवा की गति के बीच का अंतर यानी वर्टिकल विंड शियर का बेहद कम होना भी इसके लिए वरदान सिद्ध हुआ, जिसने इस चक्रवात को टूटने नहीं दिया और इसे एक अत्यंत संगठित तथा भयावह आई यानी चक्रवात के केंद्र का रूप दे दिया। संघनन की प्रक्रिया के दौरान निकलने वाली गुप्त ऊष्मा ने हवा के दबाव को इतना गिरा दिया कि समुद्री हवाएँ एक दैत्य की भाँति गरजना करने लगीं।

हमारी पृथ्वी ने इससे पहले भी कई भयावह तूफ़ानों का सामना किया है। वर्ष 1979 में आया टाइफून टिप आज भी दर्ज इतिहास का सबसे विशालकाय चक्रवात माना जाता है, जिसका व्यास लगभग 2220 किलोमीटर था और जिसने आधे अमेरिका के बराबर के क्षेत्रफल को अपनी चपेट में ले लिया था। इसी प्रकार वर्ष 2013 में फिलीपींस में तबाही मचाने वाला टाइफून हाययान या योलांडा अपनी 315 किलोमीटर प्रति घंटे की विनाशकारी हवाओं के साथ ज़मीन पर लैंडफॉल करने वाला सबसे उग्र तूफ़ान दर्ज किया गया था। फिर भी, बावी को लेकर वैज्ञानिकों की चिंता और अधिक गहरा गई है। इसका कारण इसके बनने और तीव्र होने की असामान्य गति है। आधुनिक युग के चक्रवात अब हफ़्तों के बजाय कुछ ही घंटों के भीतर एक सामान्य दबाव के क्षेत्र से बदलकर श्रेणी-4 या श्रेणी-5 के घातक रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रक्रिया को मौसम विज्ञान में रैपिड इंटेंसिफिकेशन कहा जाता है। टाइफून बावी में देखी गई यह त्वरित उग्रता इस बात का प्रमाण है कि महासागर अब अपनी सोखने की क्षमता की सीमा तक पहुँच चुके हैं और वे जमा हुई उष्मा को भयानक तूफ़ानों के रूप में बाहर फेंक रहे हैं।

यह पूरी परिघटना व्यापक वैश्विक जलवायु संकट का प्रत्यक्ष परिणाम है, जिसे मानव ने अपनी भौतिकवादी आकांक्षाओं के बल पर आमंत्रित किया है। औद्योगिक क्रांति के बाद से जीवाश्म ईंधनों कोयला, पेट्रोल, और प्राकृतिक गैस के अंधाधुंध दहन से निकलने वाली ग्रीनहाउस गैसों ने पृथ्वी के वायुमंडल को एक तपे हुए ओवन में बदल दिया है। इस अतिरिक्त गर्मी का लगभग 90 प्रतिशत हिस्सा हमारे महासागरों ने अपने भीतर समाहित किया है। परिणाम स्वरूप, महासागरीय हीटवेव यानी समुद्री लू की घटनाएँ आम हो गई हैं, जो बावी जैसे सुपर टाइफूनों को जन्म देती हैं।

टाइफून बावी हमें छोटे द्वीपीय देशों और तटीय क्षेत्रों की अत्यधिक संवेदनशीलता से भी रूबरू कराता है। गुआम, रोटा या ताइवान जैसे क्षेत्रों में ऐसे चक्रवात सांस्कृतिक और सामाजिक अस्तित्व पर प्रहार करते हैं। समुद्र के बढ़ते जलस्तर के साथ जब विशालकाय समुद्री लहरें तटीय इलाकों में प्रवेश करती हैं, तो कृषि योग्य भूमि हमेशा के लिए अनुपयोगी हो जाती है, पेय जल के स्रोत दूषित हो जाते हैं और हज़ारों परिवार अपनी सदियों पुरानी जड़ों से उखड़ जाते हैं, जिसे हम जलवायु शरणार्थी कहते हैं। ये वे लोग हैं जिनका अपना कोई दोष नहीं है, लेकिन वे दुनिया के विकसित और अत्यधिक उत्सर्जन करने वाले राष्ट्रों की नीतियों की कीमत अपनी रोज़ी-रोटी और घर खोकर चुका रहे हैं। यह स्थिति मानवीय न्याय और नैतिक उत्तरदायित्व पर भी गंभीर प्रश्नचिह्न खड़े करती है।

आज यदि प्रशांत महासागर में बावी जैसा सुपर टाइफून आता है, तो कल हिंद महासागर में चक्रवात, यूरोप में जानलेवा हीटवेव, या हिमालयी क्षेत्रों में बादल फटने और भूस्खलन की भयावह घटनाएँ घटती हैं। ये सभी घटनाएँ अलग-अलग टुकड़े नहीं हैं, बल्कि ये एक ही विशाल और बिगड़े हुए वैश्विक जलवायु तंत्र की कड़ियाँ हैं। जब पृथ्वी का औसत तापमान बढ़ता है, तो जलचक्र और वायुमंडलीय परिसंचरण की पूरी प्रणाली बिखर जाती है। हवाओं की पारंपरिक दिशाएँ बदल जाती हैं, मानसून का पैटर्न अनिश्चित हो जाता है मौसम की चरम सीमाएँ जैसे- अत्यधिक बारिश या अत्यधिक सूखा-मानव जीवन को त्रस्त करने लगती हैं।

बावी जैसे तूफ़ान मानव सभ्यता के लिए चेतावनी की घंटी हैं। वे हमें स्पष्ट रूप से बता रहे हैं कि विकास की जिस राह पर हम चल रहे हैं, वह टिकाऊ नहीं है। विशाल ढाँचे खड़े कर लेना, नदियों और समुद्रों के तटीय क्षेत्रों पर अतिक्रमण करना, प्राकृतिक आर्द्रभूमियों यानी वेटलैंड्स को नष्ट करना और वनों की अंधाधुंध कटाई करना हमें प्रकृति के प्रकोप से सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकता। बावी ने दिखा दिया कि जब प्रकृति का संतुलन बिगड़ता है, तो इंसानी तकनीक और ढाँचे उसके सामने कितने असहाय और बौने साबित होते हैं।

समय की माँग यह है कि हम आपदा के कारणों के निवारण की ओर कदम बढ़ाएँ। इसके लिए एक दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति और जीवनशैली में व्यापक बदलाव की आवश्यकता है। हमें जीवाश्म ईंधनों से किनारा करके सौर, पवन और अन्य नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों की ओर तेज़ी से बढ़ना होगा। इसके अतिरिक्त, तटीय क्षेत्रों के प्राकृतिक रक्षा कवच जैसे मैंग्रोव वन, कोर रीफ और तटीय दलदली भूमियों का पुनरुद्धार करना होगा, जो चक्रवात की लहरों और हवाओं के प्रभाव को कम करने में एक प्राकृतिक अवरोधक का काम करते हैं। नगर नियोजन और ढांचागत विकास को पर्यावरण-अनुकूल बनाना होगा ताकि वे ऐसी चरम प्राकृतिक आपदाओं का सामना करने में सक्षम हो सकें।

टाइफून बावी हमारी रोती हुई और कराहती हुई पृथ्वी की एक पुकार थी। यह एक सन्देश था कि मानव प्रकृति का स्वामी नहीं, बल्कि उसी का एक छोटा सा अंश है। यदि हम प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाकर जीने का हुनर नहीं सीखेंगे और अपनी प्राथमिकताओं को पुनर्गठित नहीं करेंगे, तो आने वाला समय इससे भी अधिक प्रचंड और विनाशकारी आपदाओं का साक्षी बनेगा।

साहित्यकारों को प्रेरित करती बेहतरीन कृति... आस साधती संवेदनाएं - डायरी

संपर्क मो. 9460237653
पुस्तक : आस साधती संवेदनाएं
विधा : डायरी
लेखक : विजय जोशी, कोटा
प्रकाशक : साहित्यागार, जयपुर
मूल्य : 425 ?
समीक्षक
डॉ. प्रभात कुमार सिंघल
लेखक एवं पत्रकार, कोटा

किसी भी लेखक द्वारा अपनी दैनिक घटनाओं, अनुभवों और विचारों को कलात्मक और प्रभावशाली रूप में लिखा जाता है और वह प्रकाशित होकर पाठकों के सामने आती है, तो यह साहित्य विधा का रूप लेती है। ऐसी ही कथाकार और विजय जोशी की प्रथम डायरी' आस साधती संवेदनाएं ' प्रकाशित हुई । कुछ दिन पूर्व किसी कार्यवश उनके आवास पर जाना हुआ तो यह डायरी मुझे सप्रेम भेंट की। विगत दो दिनों में फुर्सत के क्षणों में इसे अध्योपांत पढ़ा और इसका महत्व भी समझा। मेरे लिए डायरी पुस्तक को पढ़ने का प्रथम अवसर रहा ।

वैसे महात्मा गांधी और हरिवंशराय बच्चन के बारे में सुना था कि वे दैनिक डायरी लिखते थे। सोशल मीडिया पर ओम नगर सहित कुछ लेखकों की डायरी की चर्चा देखी। जहाँ तक मेरी समझ है डायरी लेखन से बढ़ कर दूसरा कोई मित्र नहीं हो सकता हैं। पूरी सच्चाई से डायरी लिखने वाला रोज़ मर्रा की घटना, प्रसंग और इसी बातें भी लोग डायरी में लिखते हैं आदि जिसे वह अपनी पत्नी और मित्र को भी नहीं बता सकते है। ऐसा करने से वह तनाव मुक्त भी हो जाते है और उन्हें आत्ममंथन अथवा आत्म विश्लेषण का अवसर भी मिलता है। लेखन से सोचने और विचारने की शक्ति का विकास भी होता है। डायरी लेखक जब प्रमुख सार्वजनिक बातों की पुस्तक प्रकाशित करता है तो वह पाठकों को दिशा बोध और कई प्रकार प्रेरणा प्रदान करती है।

विजय जोशी ने अपने वर्ष 2021 से 2025 तक पांच वर्ष की डायरी में अपने लेखन के सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक संदर्भों को उजागर किया है। संवेदना से जुड़े ये संदर्भ लघु भी है और विस्तृत भी। कम शब्दों में अधिक बात कही गई है। सभी प्रसंग जस के तस हैं, अनावश्यक महिमा मंडन और आत्म प्रशंसा से पूरी तरह मुक्त। भाषा आम पाठक की समझ में आने वाली है।

डायरी की शुरुआत वर्ष 2020 की 5 अप्रैल को लिखे ज्ञान के विश्वकोश शीर्षक से होती है जिसमें इन्होंने स्वामी विवेकानंद द्वारा लिखित पुस्तक मेरा भारत अमर भारत के पृष्ठ12 - 13 पर उद्धत प्रसंग में रामायण और महाभारत के संदर्भ को छुआ है। यहां से डायरी की यात्रा 207 पेज पार कर 20 नवंबर 2025 को अनुभूति ....और....संवाद तक यात्रा पूरी करती है। इस अंतिम लेख में वे सदाफूली के संवाद करते दिखाई देते हैं। खाद्य जाल, अनोखी जीव प्रकृति, जल क्रीड़ा, पग बढ़ाओ,

सुयोग, अब वह अकेली नहीं दिखेगी, त्रिवेणी, काव्य रचनाओं में बोलती है इनकी संवेदनाएं।

डायरी के पन्नों पर अखबारन के प्रसंग, प्रकृति , हिंदी दिवस, देव उठनी एकादशी, साहित्यिक संदर्भ,जीवन दर्शन, बड़े लोगों से भेंट संस्मरण,बच्चों को नशे से दूर रखने की सीख, साहित्यकारों की स्मृतियां, इनकी कृतियां पर की गई समीक्षा, लोक पर्व सांझी, व्हाट्सएप भी भेजे गए चित्र, साहित्यिक और सम्मान समारोहों की चर्चा, नीलकंठ पक्षी, हिंदी का महत्व, जीवजगत, फेसबुक पर पलायन के बाद जैसे प्रसंग, साहित्यकारों से संवाद, पुस्तक लोकार्पण, जब किशनगढ़ शैली का चित्र पूर्ण कर रहे थे, परिचर्चा, गहन विमर्श और संवाद, रचनात्मक संदर्भ, रुचि और रुझान, शीर्षक, बहुत कम ऐसा होता है, दिवस और संयोग, पुस्तक और पाठ, जीवन के पड़ाव पर, वाद्य यंत्र कमायचा, पिछला सप्ताह, रचनात्मक व्यवहार, परिवार, संस्कार और रचनात्मकता, वक्त की अदालत, प्रोत्साहन के पल, अनायास, पाठक, विद्या, सहभागिता की गरिमा, कथा - कहानी, युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व आदि के माध्यम से पाठकों के समक्ष अपनी आस साधती संवेदना शीर्षक को अपने विचारों और अभिव्यक्ति से साकार किया है। इस सब के माध्यम से लेखक ने किस प्रकार समाज के दर्पण को प्रस्तुत किया है इसे तो इस डायरी को पढ़ कर ही समझा जा सकता है। भावों का यह गुलदस्ता पाठक के लिए कई प्रकार प्रेरणा श्रोत साबित हो सकता हैं। संवाद, परिचर्चा, पठन पठान, रिपोर्टिंग आदि अनेक पहलू कुछ नया सीखने वालों के लिए पर्याप्त सामग्री है। सुझाव रहेगा कि डायरी लेखन में आगे आने वालों को इसे आवश्यक रूप से पढ़ना चाहिए।

डायरी इतनी रुचिकर है कि दो दिन में अध्योपंत पढ़ डाली। सच कहूं तो मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैने स्वयं भी डायरी लिखता हूं , इससे नए विषय मिले और लेखन में निखार आएगा। पुस्तक का कवर पेज चित्रकार एवं कला समीक्षक चेतन औदिच्यने शीर्षक अनुरूप बनाया हैं जो अत्यंत आकर्षक है।

लेखक अपने लेखकीय 'भावों का संसार' में लिखता है,' अपने अनुभवों के साथ चिंतन-मनन करता हुआ व्यक्ति जब अपने आस -पास के रचनात्मक परिवेश के साथ आत्मसात् करता है तो जीवन और मूल्यों के प्रति उत्पन्न आस ही उसे संवेदना के उस स्तर के साथ मार्ग प्रशस्त करती हैं जहाँ साधन और साध्य समन्वित होकर उसको प्रेरित करते हैं और वह निरन्तर अपनी रचनात्मक यात्रा के साथ आगे बढ़ता रहता है। आगे बढ़ने की यही दृष्टि उसकी आस को साधती है और वह अपनी भाव संवेदनाओं की उर्वरा भूमि पर अपने कौशल से सृजनात्मक पौध विकसित करता है। यही पौध जीवन की वास्तविकताओं और मानवीय संवेदनाओं के विविध पक्षों से साक्षात्कार कराती है। साथ ही अपने परिवेश में उत्पन्न स्थितियों और परिस्थितियों में स्वयं को खोजने का अवसर भी प्रदान करती है।

इन्हीं सन्दर्भों को आत्मसात् करते हुए मैंने अपने सामाजिक, साहित्यिक और सांस्कृतिक जीवन के विविध पक्षों को रेखांकित करते हुए उनमें संचारित भावों को उभारने का प्रयास किया।' एक फ्लैप पर प्रकाशक हिमांशु वर्मा लिखते हैं,' कथेतर में प्रकाशित यह डायरी ' आस साधती संवेदनाएं' साहित्यकारों, साहित्य प्रेमियों, विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं के लिए सार्थक और उपयोगी रहेगी। 'लेखक ने पुस्तक को अपने माता - पिता को समर्पित किया है। उन सभी का आभार व्यक्त किया है जो जीवन यात्रा में जिन्होंने इनके सृजनात्मक पक्ष को दिशाबोध प्रदान करते हुए सदैव रचनात्मकता की ओर प्रेरित किया है।

जांजगीर के युवा प्रवीण साहू की छत्तीसगढ़ी फिल्म 17 जुलाई को होगी रिलीज

जांजगीर। ग्रामीण अंचल की प्रतिभाएं अब बड़े पर्दे पर अपनी पहचान बना रही हैं ।पूरे क्षेत्र के लिए यह गर्व का विषय है कि जांजगीर के ग्राम बोड़सरा के युवा प्रवीण साहू छत्तीसगढ़ी फिल्म उद्योग में बतौर निर्माता एवं अभिनेता अपनी नई पहचान स्थापित कर रहे हैं।

उनकी बहुप्रतीक्षित छत्तीसगढ़ी फिल्म 'मोर वाली अलग हे' आगामी 17 जुलाई को प्रदेशभर के सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म का निर्देशन एवं लेखन आनंद मानिकपुरी ने किया है। इसमें छत्तीसगढ़ के सुप्रसिद्ध गायक सुनील सोनी, भीमा बंजारे और अजय चौहान ने अपनी मधुर आवाज दी है। फिल्म की विशेषता इसका आकर्षक VFX और आधुनिक 5.1 साउंड इफेक्ट्स हैं, जो दर्शकों को बेहतरीन सिनेमाई अनुभव प्रदान करेंगे।

किसानों का दुःख कौन जाने ?

महोदय,

संवेदी सूचकांक अपने उतार-चढ़ाव से देश के आर्थिक जगत में हो रहे बदलाव को झट से परिलक्षित कर देता है। सरकार को स्पष्ट संकेत मिल जाता है और वह अपनी आर्थिक गतिविधियों एवं योजनाओं में तदनुसार तब्दीली करने की बात सोचने लगती है।

पर कभी ऐसा हुआ है कि किसी क्षेत्र विशेष में भीषण सूखा पड़ने अथवा बाढ़ आने से संवेदी सूचकांक में मामूली फर्क भी आया हो। या आंध्रप्रदेश के किसानों द्वारा निरन्तर आत्महत्या करने का कोई असर इस सूचकांक पर हुआ हो। यह संवेदी सूचकांक भला कैसी नाड़ी है जो अर्थजगत के मूल मर्ज का ही जरा भी संकेत नहीं देता है। जाहिर है, गरीब किसानों और मजदूरों का खून इस नाड़ी में पहुंचता ही नहीं होगा। फिर इसपर इतना भरोसा क्यों ? कृषि को अभी तक उद्योग का दर्जा नहीं दिया जा सका है। स्टॉक-एक्सचेंच में

कृषि-क्षेत्र के भी शेयरों की लिस्टिंग हो-ऐसी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। फिर उस देश की अर्थव्यवस्था के सूचकांक के रूप में इसकी क्या प्रमाणिकता रह जाती है, जिस देश की तीन-चैथाई जनता कृषि अथवा कृषि आधारित उद्योगों पर निर्भर है। इसे सिर्फ पूँजीपतियों तथा अभिजात्य वर्ग की नाड़ी कहा जाए तो इस सचाई को जबान से फिसली हुई बात नहीं कही जाएगी। और भारत की परिपक्व मीडिया के बड़बोलेपन की विडंबना देखिए

कि यदि इस छद्मी सूचकांक में कभी अप्रत्याशित उछाल आ जाता है तो मीडिया झट से भारत को रातों-रात समृद्धि के शिखर पर टिकाकर चला आता है।

आपका
▶ **ज्ञान मुकेश वर्मा, पटना**